प्रकाश-पुस्तक-माला की २४वीं पुस्तक

संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ

उनके आचार-विचार, रीति-रिवाज, रूपरंग, नखशिख, शृंगार, परिच्छादन, सुविधाएँ, असुविधाएँ, उत्सव-नृत्य, सामाजिक महत्व तथा अन्य आवश्यक बातें.

लेखक

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

सम्पादक—हिन्दी मनोरञ्जन

प्रकाशक

शिवनारायण मिश्र, भिषग्रत्न

प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर

२॥)

जाब प्रेस, कानपुर ।

निवेदन

'संसार की स्त्रियाँ' के नाम से एक लेख-माला 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका में कई वर्ष तक निकलती रही थी। वह लेख-माला हिन्दी पाठकों को बहुत पसंद आई। हमारा विचार था कि उक्त लेख-माला में संसार के सब देशों पर लेख प्रकाशित करें – भारत के सम्बन्ध में तो एक लेख-माला अलग ही निकालने का विचार था और उसके लिए हमने तैयारी भी यथेष्ट करली थी – अर्थात् बहु-संख्यक चित्र एकत्र कर लिये थे; परन्तु खेद है कि 'प्रभा' का प्रकाशन कुछ काल के लिए स्थगित हो जाने के कारण हमारा यह विचार कार्य्य-रूप में परिणत न हो सका प्रभा में निकालने के साथ ही साथ हमारा यह विचार भी था कि हम इस लेख-माला को पुस्तकाकार भी प्रकाशित करेंगे। अपने उस विचार के अनुसार तथा हिन्दी-प्रेमियों के अनुरोध से हम उस लेख-माला का कुछ अंश आज पुस्तक रूप में हिन्दी पाठकों के सन्मुख उपस्थित करते हैं। इस अंश में केवल असभ्य जातियों की स्त्रियों का ही वर्णन है, अतएव इसका नाम 'संसार की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ' रक्खा है। आशा है पाठक हमारी इस योजना को पसंद करेंगे। यदि पाठकों ने इस पुस्तक का यथेष्ट आदर किया तो हम संसार के सब देशों पर इसी प्रकार की सचित्र और सुन्दर पुस्तकें छापकर प्रकाशित करते रहेंगे।

निवेदक—

शिवनारायण मिश्र।

प्रकाश-पुस्तक-माला की कुछ पुस्तकें ।

पुस्तक		मूल्य
तिलक चित्रावली	..	१)
व्यङ्ग चित्रावली	..	१॥)
वन्दे मातरम् चित्राधार	..	२)
गोरा (रवीन्द्रनाथ टैगोर)	..	३)
घर बाहर ,,	..	१।)
मुक्तधारा ,,	..	॥=)
वलिदान (विक्टर ह्यूगो) सचित्र		२)
वज्राघात (आपटे)	..	२॥)
महाराज नन्दकुमार को फाँसी	..	२॥)
कृष्णार्जुन युद्ध	..	॥=)
उद्योगी पुरुष	..	।=)
साम्यवाद	..	।=)
राष्ट्रीय वीणा भाग १	..	॥=)
राष्ट्रीय वीणा भाग २	..	॥)
मेरे जेल के अनुभव	..	।=)
देवी जोन	..	।=)
रूस का राहु	..	।=)
रूस की राज्य क्रान्ति (सजिल्द)		२॥)
चीन की राज्य क्रान्ति (सजिल्द)		१॥)
सचित्र अकाली दर्शन	..	॥।)
टाल्सटाय के सिद्धान्त	..	१।)
सती सारंधा	..	॥=)
त्रिशूल तरङ्ग	..	॥=)
फ़िजी में भारतीय प्रतिज्ञा बद्ध कुली प्रथा	..	१)
एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का बर्ताव	..	।=)
सम्राट् अशोक	..	१)
भारतीय सम्पत्ति शास्त्र सजिल्द	..	५)
शिक्षा सुधार	..	॥)
फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष	..	॥)
मेघनाद वध	..	॥।)
बहिष्कृत भारत	..	।)
सितार शिक्षक	..	।=)
बीसवीं सदी का महाभारत	..	॥।)
राजनीति प्रवेशिका	..	।=)
कृषक क्रन्दन	..	≡)
रानाडे की जीवनी	..	=)॥
सरोजिनी की जीवनी	..	।=)
हमारा भीषण ह्रास	..	।)
कुसुमाञ्जलि	..	=)
दादा भाई नौरोजी	..	=)॥
चम्पारन की जाँच	..	।-)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र	..	।)
स्वराज्य पर मालवीयजी	..	।)
राजयोग	..	।=)
आयर्लैण्ड में होमरूल	..	॥)
आयर्लैण्ड में मातृभाषा	..	।=)
कांग्रेस का इतिहास	...	॥-)
श्रीकृष्णचरित्र	...	।=)

भूमिका

पालीनीशिया

न्यू ज़ीलैण्ड

मेलेनीशिया

माइक्रोनीशिया

आस्ट्रेलिया

टारेस स्ट्रेट्स और न्यू गाइना

सगडा द्वीप तथा सैलीबीस

मलाया प्रायद्वीप

फिलीपाइन द्वीप

मेडागास्कर

भूमिका

पालीनीशिया

न्यू ज़ीलैण्ड

मेलेनीशिया

चित्र-सूची

माइक्रोनीशिया

आस्ट्रेलिया

टॉरेस स्ट्रेट्स और न्यू गाइना

सुमात्रा द्वीप तथा सैलीबीस

मलाया प्रायद्वीप

फिलीपाइन द्वीप

मेडागास्कर

फिजी की स्त्रिया टोकरी बना रही हैं.

र की असभ्य जातियों की स्त्रियाँ।

देव अबला के नाम से पुकारी जाती रही है। परन्तु अबला
। कितनी बलवान है यह बात प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास
देखने से ज्ञात हो सकती है। बड़े बड़े वीर पुरुष तथा
व योद्धा स्त्री के एक नयन बाण से विद्ध होकर कितने
अशक्त हो जाते रहे हैं। इस अबला ने बड़े बड़े वीरों
है, बड़े बड़े विद्वानों तथा बुद्धिमानों को पागल बना दिया
गयों और तपस्वियों को भ्रष्ट कर दिया है। सभ्य से सभ्य

तथा जङ्गली से जङ्गली जाति में भी स्त्री सदैव ही पुरुषों की एक बहुत बड़ी कमजोरी रही है। बड़े बड़े कवियों ने स्त्री की प्रशंसा में अपनी प्रतिभा का अन्त कर दिया है। इसके प्रतिकूल पुरुषों ने स्त्रियों को बुरा कहने में भी कोई कसर नहीं उठा रक्खी। संसार में जितने दुर्गुण हैं वे सब स्त्रियों ही के मत्थे मढ़ दिये गये हैं। केवल सभ्य जातियों में ही नहीं वरन् असभ्य जातियों में भी स्त्री की प्रशंसा तथा बुराई की गई है। जङ्गली जातियों में भी जहाँ एक ओर स्त्रियों की प्रशंसा की जाती है वहीं दूसरी ओर उन्हें दुर्गुणों की खान कहा जाता है। परन्तु, इतना सब कुछ होते हुए भी अबला स्त्री अब भी पुरुषों पर अपना सिक्का पूर्ण रूप से जमाये हुए है—उसके बिना पुरुषों का कार्य एक क्षण भी नहीं चल सकता।

सौन्दर्य

सौन्दर्य की अभी तक कोई ऐसी व्यापक परिभाषा नहीं बनी है जो समस्त संसार पर समान रूप से लागू हो सके। हम जिसे सौन्दर्य समझते हैं दूसरे उसको असौन्दर्य मानते हैं। अधिक मोटा होना सभ्य जातियों में बदसूरती समझी जाती है, परन्तु न्यू ज़ीलैण्ड की सामोअन जाति, ईरानियों, तुर्कों, मूरों, अफ्रीका तथा अमेरिका की कुछ जङ्गली जातियों में मोटापा खूबसूरती का द्योतक है। कहीं गोल सिर सुन्दर समझा जाता है तो कहीं लम्बा और चपटा सिर सुन्दर माना जाता है। दक्षिणी अमेरिका में फूली हुई पिण्डलियाँ सुन्दर समझी जाती हैं, इसके लिए वे पिण्डलियों को बाँध बाँध कर मोटा कर देते हैं। अफ्रीका में जङ्गली जातियाँ कुचों को लम्बा बनाने की चेष्टा करती हैं, क्योंकि उनके यहाँ लम्बे कुच ही सुन्दर माने जाते हैं। पालीनीशिया में माताएँ अपने बालकों की नाक दाब दाब कर चपटी कर देती हैं। उनका कथन है कि बड़ी और पूर्णोन्नत नाक सुन्दरता को बिगाड़ देती है। चीन में अभी तक इतने छोटे पैर, जिससे कि स्त्री चल फिर भी न सके, सुन्दर माने जाते हैं। बड़ी बड़ी आँखें किसे सुन्दर नहीं प्रतीत होतीं;

ातियाँ छोटी आँखों में ही सौन्दर्य की पूर्ण छटा का दर्शन
ा वाले श्वेत वर्ण को सबसे सुन्दर वर्ण समझते हैं; परन्तु
वह श्वेत-कुष्ठ सा दिखाई पड़ता है। भारतीयों का
तक वर्ण में कुछ नमक न हो तब तक वह सुन्दर नहीं
। इसी प्रकार जङ्गली जातियाँ अपने साँवले रङ्ग को ही सब
नती हैं। श्वेत रङ्ग को वे मुर्दे का रङ्ग समझती हैं। इसमें
र्ण का सौन्दर्य के साथ बड़ा घनिष्ट सम्बन्ध है। एक ऐसी
र सब नखशिख सुन्दर कहे जा सकते हैं केवल वर्ण काला
मझी जाती है। यदि उसका वर्ण गौर हो जाय; तो सुरूपा
इसी प्रकार यदि एक गौर वर्ण की स्त्री, जो अन्य दृष्टि में
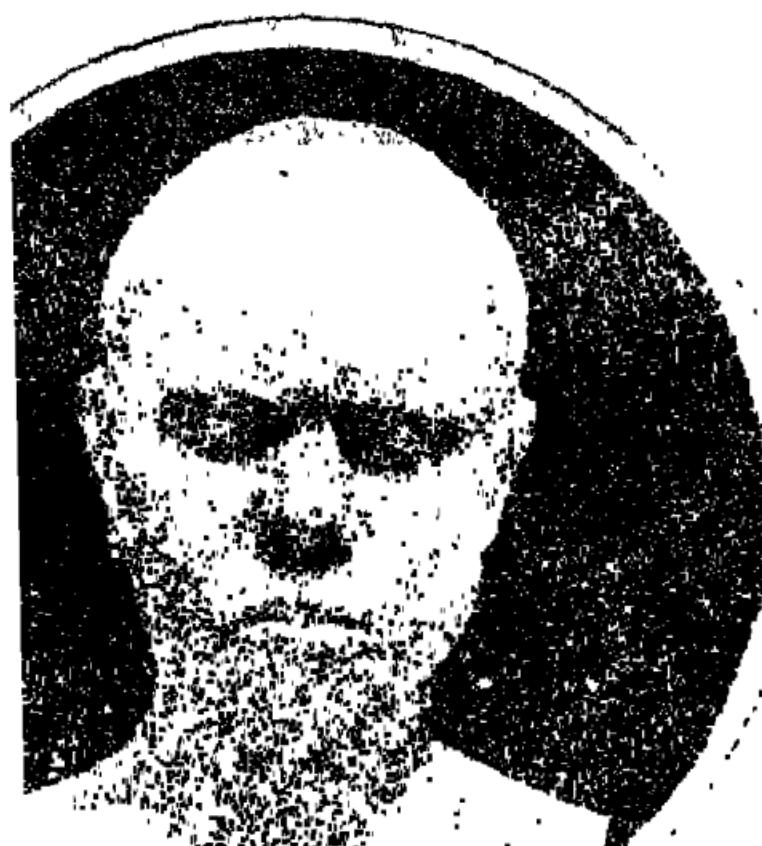
आस्ट्रेलिया की स्त्री की प्रस्तर मूर्ति

पूर्ण सुन्दर समझी जाती है, यदि उसका वर्ण काला हो जाय तो अधिकांश की दृष्टि में बदसूरत हो जायगी। यह बात पृष्ठ ११ में दिये हुए चित्र से भली भाँति समझ में आ सकती है। यह एक आस्ट्रेलियन स्त्री की प्रस्तर मूर्त्ति है। इस स्त्री का रङ्ग काला है और असली सूरत में देखने पर यह बदसूरत दिखाई पड़ती है। परन्तु मूर्ति का रङ्ग श्वेत होने के कारण यह उतनी बदसूरत नहीं दिखाई पड़ती। केवल वर्ण बदल जाने से इसकी बदसूरती में काफी कमी हो गई।

यूरोप के सौन्दर्य विशारदों का कथन है कि वर्ण से सौन्दर्य की अधिक वृद्धि अथवा ह्रास नहीं होता। एक स्त्री जो अन्य प्रकार से सुन्दर कही जा सकती है केवल वर्ण काला होने से कुरूपा नहीं मानी जा सकती। इसी प्रकार एक गोरी स्त्री, जिसके नखशिख सुन्दर नहीं हैं, केवल इसीलिए सुन्दर नहीं मानी जा सकती कि वह गोरी है। इस बात में बहुत कुछ सत्यता है; परन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि केवल वर्ण से सौन्दर्य की बहुत कुछ वृद्धि तथा उसका बहुत कुछ ह्रास हो जाता है। एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री का मुख यदि काला कर दिया जाय तो उसकी सुन्दरता उतनी न रहेगी, उसका बहुत कुछ ह्रास हो जायगा। इसी प्रकार यदि एक काली स्त्री, जिसके नख शिख सुन्दर है, गोरी हो जाय तो उसकी सुन्दरता पहले की अपेक्षा बहुत कुछ बढ़ जायगी। अतएव यह सिद्ध हो गया कि नख शिख की सुन्दरता के साथ वर्ण की सुन्दरता भी सौन्दर्य वृद्धि के लिए आवश्यक है।

शरीर को नाना प्रकार के अलङ्कारों से, रङ्गों से, तथा अन्य कृत्रिम उपायों से सुन्दर बनाना ही शृङ्गार का अभिप्राय है। शृङ्गार का आदर्श भी संसार में भिन्न भिन्न है। यूरोप तथा अमेरिका की स्त्रियाँ मुख पर श्वेत पाउडर मल कर गालों पर हलका गुलाबी रङ्ग का पाउडर लगाती हैं। ओठों को

शृंगार

यूनामा की स्त्री.
वक्षस्थल पर गुदना गुदाये हुए.

लाल रङ्ग से रँगती हैं। यूरोप में आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाने का रिवाज बिल्कुल नहीं है, परन्तु भारतवर्ष, ईरान तथा रूम में स्त्रियाँ आँखों में सुर्मा अथवा काजल लगाती हैं। इसी प्रकार हाथ पैरों में मेंहदी लगाने का रिवाज भी भारत, ईरान तथा रूम में पाया जाता है। अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया में जङ्गली जातियों की स्त्रियाँ अपने शरीर में अनेक प्रकार के रङ्ग पोतती हैं। लाल, पीला, श्वेत, काला तथा अन्य अनेक रङ्ग शरीर में, केवल सौन्दर्य वृद्धि की दृष्टि से पोते जाते है। शृङ्गार करने का रिवाज संसार की प्रत्येक जाति की स्त्रियों में पाया जाता है। सभ्य जाति की स्त्रियाँ, सोने, चाँदी, हीरे, मोती इत्यादि के अलङ्कार पहनती हैं। असभ्य जातियाँ लकड़ी, हड्डी, बाँस, घास फूस, ताँबा, पीतल, पोत इत्यादि के अलङ्कारों से अपना शरीर सुसज्जित करती हैं।

गुदना

जङ्गली जातियों में गुदना भी शृङ्गार का एक अङ्ग माना जाता है। केवल जङ्गली जातियों में ही नहीं, वरन सभ्य कहलाने वाली अनेक जातियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ भी कभी कभी बाँहों अथवा भुजाओं में गुदना गुदवाती हैं। भारत में भी स्त्रियाँ ठोढ़ी तथा गाल पर तिल गुदवाती है। न्यू ज़ीलैण्ड की माओरी जाति की स्त्रियाँ अपनी समस्त ठोढ़ी गुदवा डालती हैं। ऐनू जाति की स्त्रियाँ अपने ऊपरी ओंठ पर ऐसा गुदना गुदवाती है जो बिल्कुल मूँछों की तरह दिखाई पड़ता है। यद्यपि बहुत सी दशाओं में गुदने से सौन्दर्य वृद्धि की अपेक्षा सौन्दर्य नाश हो जाता है; परन्तु सौन्दर्य का आदर्श और शृङ्गार का आदर्श भिन्न होने के कारण वह अच्छा समझा जाता है। अलजीरिया की स्त्रियाँ भी गुदना गुदवाती हैं। १५ वें पृष्ठ पर अलजीरियन स्त्री का चित्र है जो दोनों गालों तथा दोनों बाँहों पर गुदना गुदवाये हुए है। यह स्त्री अन्य दृष्टि से सुन्दर कही जा सकती है; परन्तु अधिक गुदना गुदाने के कारण, एक भारतीय की दृष्टि में उसका सौन्दर्य कुछ

अलजीरिया की स्त्री.

(मुख तथा बाहों पर गुदना गुदाये हुए.)

बिगड़ गया है; परन्तु यदि एक अलजीरियन से पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि इससे स्त्री का सौन्दर्य बहुत कुछ बढ़ गया।

ऐसी जङ्गली जातियाँ, जिनका रङ्ग श्याम होता है, रङ्ग का गुदना नही गुदवातीं; क्योंकि काले चमड़े में रङ्ग का गुदना दिखाई नहीं पड़ता। अतएव वे चमड़े को छील कर अथवा इस प्रकार दाग कर जिससे कि उस स्थान का चमड़ा उभर आवे, गुदना गुदाती हैं। अफ्रीका की काङ्गो जाति में इस प्रकार के गुदने का बहुत रिवाज है। अन्यत्र काङ्गो फ्रीस्टेट की एक स्त्री का चित्र दिया गया है, इसकी छाती और पेट पर उभरा हुआ गुदना गुदा हुआ है।

संसार की अनेक जाति की स्त्रियों में अनेक प्रकार के गहने पहनने का रिवाज है। न्यू ज़ीलैण्ड में छोटे छोटे जीवित पक्षी कानों में लगाये जाते हैं। पेरिस की लेडियाँ अपनी कमर में जीवित कछुए लटकाती हैं। अलङ्कारों के लिए शरीर को बिगाड़ लेना प्रायः संसार की सभी स्त्रियों का स्वभाव है। भारत में स्त्रियाँ केवल गहने पहनने के लिए कानों की दुर्दशा कर डालती हैं। पूर्वी तथा मध्य अफ्रीका में स्त्रियाँ ऊपरी ओंठ को फाड़ कर उसमें गहना पहिनती हैं। उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में नीचे का ओंठ फाड डाला जाता है और उसमें गहना पहना जाता है। दक्षिण अमेरिका में गाल केवल गहना पहनने के लिए फाड़ डाले जाते हैं। नाक में कील तथा नथ पहनने का रिवाज भारत में है, तातारी स्त्रियाँ भी नाक में नथ पहनती हैं। गले में हँसली, तौक़ तथा अन्य गहने भारत में खूब पहने जाते हैं। काङ्गो (अफ्रीका) की स्त्रियाँ गले में इतने बड़े तौक़ पहनती हैं कि एक एक तौक़ का वज़न १५ सेर तक का होता है। पूर्वी अफ्रीका में पैरों तथा बाँहों में लोहे के तार लपेटे जाते हैं। बर्मा की कुछ पहाड़ी जातियाँ गले में ऐसे गहने पहनती हैं जिस से उनकी गर्दनें असाधारण रूप से लम्बी हो जाती हैं।

कांगो (अफ्रीका) की स्त्री
गुदना गुदाये तथा गले में तौक़ पहने हुए.

यूरोप की सभ्य जातियाँ भी गले में गलेबन्द तथा हार पहनती हैं। कानों में रिङ्ग तथा हाथों में कड़े पहनती हैं। इस प्रकार संसार की कोई ऐसी जाति नहीं है जिसकी स्त्रियों को गहने से प्रेम न हो।

सिर के बालों को सजाने का ढङ्ग भी भिन्न भिन्न है। अनेक जातियों में तो बाल केवल सौन्दर्य वृद्धि के लिए सजाये जाते हैं, परन्तु कुछ जातियों में बालों का एक खास ढङ्ग से सजाना एक विशेष अर्थ रखता है। उदाहरणार्थ एरीज़ोना की होपी जाति में कुमारियाँ सिर के दोनों ओर बालों के दो फूल से बना लेती हैं, यह फूल इस बात के द्योतक होते हैं कि कन्या का अभी विवाह नहीं हुआ। विवाह होने के पश्चात फिर कोई स्त्री बालों के फूल नहीं बना सकती। विवाह होने के पश्चात् वह मूली की शकल की अलक बना कर दोनों कन्धों पर लटकाये रहती है।

दाँतों को काला करना, उन्हें रेतवा देना भी अनेक जातियों में सौन्दर्य वृद्धि का हेतु माना जाता है। मेलेनीशिया की अनेक जातियाँ पान खाकर अपने दाँत काले कर लेती हैं; क्योंकि दाँतों का श्वेत रहना उनमें बदसूरती समझा जाता है। इसी प्रकार अफ्रीका की काङ्गो जाति की स्त्रियाँ अपने दाँत रेतवा डालती हैं। बहुत सी जातियों में विवाह के समय सामने के एकाध दाँत तुड़वा दिये जाते हैं।

शृङ्गार के पश्चात् परिच्छादन का प्रश्न उठता है। संसार की अधिकाश जातियाँ वस्त्र पहनती हैं। वस्त्र पहनने का हेतु केवल शरीर छिपाना ही नहीं है वरन् शरीर की सौन्दर्य-वृद्धि करना भी है।

परिच्छादन

केवल अङ्ग प्रत्यङ्ग को पुरुषों की दृष्टि से छिपाये रखने के विचार से स्त्रियाँ वस्त्र नहीं पहनतीं। यदि ऐसा होता तो बहुत सी जातियाँ, जिनमें किसी विशेष अङ्ग की लज्जा की जाती है और उसी को छिपाने की चेष्टा की जाती है, समस्त अङ्ग को वस्त्रों से न ढकतीं। उदाहरणार्थ मुसलमान स्त्रियाँ अधिकतर अपना मुख

पूर्वी अफ्रीका की स्त्री.
ओंठ में गहना पहने हुए.

परपुरुष को नहीं दिखातीं। यदि कोई परपुरुष किसी मुसलमान स्त्री को नङ्गी देख ले तो वह स्त्री सब से पहले अपना मुख छिपायगी, दूसरे अङ्ग प्रत्यङ्गों को छिपाने का ज़रा भी प्रयत्न न करेगी। चीनी स्त्रियाँ अपना सब अङ्ग पुरुष को दिखा देंगी, परन्तु पैर कभी न दिखावेंगी, पैर देखने का अधिकार पति ही को प्राप्त रहेगा। जापानियों में स्त्री-पुरुष एक स्थान पर नङ्गे नहाते हैं, स्त्रियाँ ऐसी दशा में भी पुरुष के सामने कोई लज्जा अनुभव नहीं करतीं। परन्तु यदि किसी स्त्री की नङ्गी तस्वीर कोई पुरुष देख ले तो वह स्त्री लज्जा से मर सी जाती है। इसी लिए जापान में स्त्री के नङ्गे चित्र बहुत कम बनाये जाते है। इसके प्रतिकूल यूरोप में स्त्री पुरुष के सामने नङ्गी नहीं हो सकती, परन्तु स्त्रियों के असंख्य नङ्गे चित्र बाज़ारों में खुले तौर पर बिकते हैं। यूरोपियन स्त्रियाँ ड्रार्स (छोटा पाजामा जो पेटी कोट के नीचे पहना जाता है) पहने हुए पुरुष के सामने कभी नहीं आ सकतीं-यद्यपि ड्रार्स से उनके सब अङ्ग ढके रहते हैं; परन्तु नाच में वे ऐसे महीन कपड़े पहनती हैं कि जिससे उनका समस्त शरीर नङ्गा दिखाई पड़ता रहता है। स्पेन की स्त्रियाँ किसी पुरुष को अपनी पिण्डलियाँ नहीं दिखातीं, पिण्डलियों के देखने का अधिकार केवल पति को रहता है—वैसे चाहे कोई पुरुष अन्य सब अङ्ग देख ले। जङ्गली जातियों में भी इसी प्रकार की प्रथाएँ हैं। उत्तर—पश्चिमी अमेरिका की स्त्री किसी भी पुरुष के सामने नङ्गी आ सकती है, पर यदि उसके ओंठ में उसका गहना न हो तो वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। अफ्रीका की कुछ जातियों में यह प्रथा है कि प्रत्येक स्त्री अपनी कन्धनी में एक लकड़ी पीछे की ओर लटकाये रहती है, जिस स्त्री की कन्धनी में यह लकड़ी न लगी होगी वह कभी पुरुष के सामने नहीं आवेगी। जो जातियाँ बिल्कुल नग्न रहती हैं उनमें भी कोई न कोई चिन्ह ऐसा होता है जिसके बिना कोई स्त्री पुरुष के सामने नहीं आ सकती।

जल-वायु का प्रभाव भी परिच्छादन पर यथेष्ट पड़ता है। एक जर्मन विद्वान ने परिच्छादन को दो भागों में विभाजित किया है। एक तो शीत-प्रधान

ा-प्रधान। उष्ण देशों में केवल कमर से लेकर पैरों अथवा
हनने की आवश्यकता पड़ती है। यही कारण है कि भूमध्य
प जितने देश हैं उनके निवासी केवल गुप्ताङ्गों को छिपाने
लेकर घुटनों तक कपड़ा पहनते हैं। क्योंकि, उन्हें अधिक
कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती। जिन जङ्गली जातियों
छुपाने की भावना विद्यमान नहीं है वे जातियाँ नग्न तक

कांगो की स्त्रियाँ.
मुख पर गुदना गुदाये तथा दाँत रेतवाये हुए.

इसके प्रतिकूल शीत-प्रधान देशों में कपड़ा पहनना अनिवार्य है। बिना कपड़े पहने वहाँ कोई जीवित नहीं रह सकता। यही कारण है कि शीत-प्रधान देशों की जङ्गली जातियों में यद्यपि लज्जा का भाव इतना नहीं होता कि वे अपने गुप्ताङ्गों को छिपाना अपना पहला कर्तव्य समझें, परन्तु तो भी उन्हें, केवल शीत बचाने के लिए, वस्त्र पहनने पड़ते हैं।

परन्तु एक बार लज्जा का भाव उत्पन्न हो जाने पर फिर बिना आवश्यकता भी वस्त्र पहनने पड़ते हैं। उदाहरणार्थ यूरोपियन जाति के लोग ऐसे गर्म देशों में जाकर भी; जहाँ वस्त्र पहनने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती, उतने ही वस्त्र पहनते हैं जितने कि वे यूरोप में पहनते हैं। इसी प्रकार अरब के निवासी नीचे से ऊपर तक अपने शरीर को वस्त्रों से ढके रहते हैं—यद्यपि अरब एक ऐसा गर्म देश है जहाँ बहुत कम कपड़े पहनने की आवश्यकता पड़ती है।

सभ्य जातियों में वस्त्र न केवल शरीर को छिपाने के लिए पहने जाते हैं और न केवल शीत से बचने के लिए—वरन् शरीर का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए भी पहने जाते हैं। यही कारण है कि सभ्य जातियों में नित्य नये फेशन और नई काट छाँट के वस्त्र बनते रहते हैं। अतएव यह सिद्ध हुआ कि सभ्य जातियों में वस्त्र पहनने के मुख्य दो अभिप्राय होते हैं—एक तो शरीर को छिपाना और दूसरे सौन्दर्य-वृद्धि करना। जङ्गली जातियों में भी मुख्य कारण दो ही हैं—एक तो शरीर को छिपाना, दूसरा शीत से बचना। असभ्य जातियों में वस्त्र बहुत कम, केवल यथाआवश्यकता, पहने जाते हैं। यह बात पाठकों पर प्रस्तुत पुस्तक पढ़ने से भली भाँति विदित हो जावेगी। इसका कारण यही है कि एक तो असभ्य जातियों में शरीर को छिपाने की भावना उतनी प्रबल नहीं होती जितनी कि सभ्य जातियों में होती है, दूसरे वस्त्रों द्वारा सौन्दर्य-वृद्धि करने की कला वे बिल्कुल नहीं जानतीं। हाँ, अब यूरोपियन तथा अमेरिकन मिशनरियों की कृपा से उन्हें वस्त्रों का महत्व

रहा है। अतएव अब उन्होंने वस्त्र पहनने आरम्भ

तयों की विवाह प्रथाएँ भी भिन्न भिन्न हैं । कहीं कन्या कन्या स्वयम् ही वर को चुनती है, कहीं विवाह करने का समस्त भार केवल माता पिता पर होता है। कुछ जातियों को छोड़ कर अधिकांश जातियों में कन्या तथा वर को विवाह के पहले परस्पर मिलने जुलने की पूर्ण ती है।

य जातियों में कन्या स्वयम् वर को पसन्द करके विवाह प्रथा है कि वर को कोई वीरता का काम करके पने को वीर प्रमाणित करना पड़ता है। ये वीरता के

आस्ट्रेलियन स्त्रियों का द्वन्द-युद्ध

काम या तो किसी शत्रु को परास्त करना, किसी भयानक जन्तु का शिकार करना अथवा अन्य इसी प्रकार के कार्य करके दिखलाना होते हैं। जिन जातियों में शत्रुओं की खोपड़ियाँ एकत्र करने की प्रथा है, उनमें कन्या उसी युवक को पसन्द करती है, जिसके पास खोपड़ियों की संख्या अधिक होती है।

मलाया प्रायद्वीप की कुछ असभ्य जातियों में यह प्रथा है कि कन्या भागती है और विवाह की इच्छा रखने वाला युवक उसको पकड़ने दौड़ता है। यदि युवक कन्या को पकड़ लेता है तब तो उसके साथ कन्या का विवाह हो जाता है अन्यथा वह उस कन्या के योग्य नहीं समझा जाता। कुछ जातियों में विवाह केवल धन-बल द्वारा होता है। इन जातियों में कन्या-विक्रय की प्रथा के अनुसार विवाह किया जाता है। जो युवक अधिक रुपये दे सकता है, उसी का विवाह होता है। ऐसी जातियों में दरिद्र युवक आजन्म अविवाहित ही रहते हैं।

विवाह के समय खुशी मनाना प्रायः सभी असभ्य जातियों में पाया जाता है। सभ्य जातियों की तरह असभ्य जातियों में भी विवाह के समय बड़े बड़े भोज दिये जाते हैं, नाच गान भी खूब होता है।

जहाँ स्त्रियों की अधिकता है वहाँ एक पुरुष अनेक विवाह कर डालते हैं; परन्तु जहाँ स्त्रियों की कमी है वहाँ एक स्त्री अनेक पुरुषों की पत्नी बनकर रहती है। जहाँ एक स्त्री के अनेक पति होते हैं वहाँ बहुधा स्त्रियों में सौतियाडाह होने के कारण परस्पर लड़ाई झगड़े होते रहते हैं। आस्ट्रेलिया तथा पेसिफ़िक महासागर के कुछ अन्य छोटे छोटे द्वीपों में सौतों में परस्पर केवल मौखिक वादविवाद ही नहीं होता वरन् खुले रूप से द्वंद-युद्ध होता है—जिसे सैकड़ों स्त्री-पुरुष देखते हैं। इस द्वंद-युद्ध में जो स्त्री विजय प्राप्त करती है वह आदर तथा सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है और जो हारती है वह अपने पति तथा समाज की दृष्टि से गिर जाती है।

मलाया प्रायद्वीप का साकाई युवती.
नाक में लकड़ी पहने हुए.

जातियों का कोई विशेष धर्म्म नहीं है। सर्व शक्ति
ना करना उनके लिए असम्भव है। वे केवल उन चीज़ों
पूजते हैं जो उनसे अधिक बलवान हैं और जो उन्हें
पहुँचा सकती हैं। उनमें पूजा का भाव केवल यह
जो चीज़ें उन्हें हानि पहुँचा सकती हैं उन्हें इस प्रकार
ा कि वे हानि पहुँचाने का कभी इरादा भी न कर
ज्य वस्तुएँ साँप, भूत-प्रेत तथा भयानक आकार-प्रकार के
य होते हैं। अधिकतर अपने मृत पुरुषों की मूर्तियाँ, खो
ों को ये लोग पूजते हैं। अथवा, यदि उनकी जाति में

पूर्वी अफ्रीका की मसाई स्त्रियाँ.
पैरों में लोहे के तार पहने हुए.

ापी तथा बलशाली राजा अथवा मुखिया हो गया है जो
र रखते हैं और उसको पूजते हैं। टोना-टोटका मन्त्र
ातियों में बहुत प्रचार है। यह भी उनके धर्म का एक
और जो व्यक्ति इसे जानता है वही उनका पुरोहित तथा
है। रोग को ये लोग प्रायः जन्त्र मन्त्र से ही दूर करते
और जहाँ तक देखा गया है इसमें उन्हें सफलता भी
मन्त्र पर इन जातियों का इतना विश्वास होता है कि
का ये लोग कोई मूल्य ही नहीं समझते। अनेक जातियों

परीज़ोना की होपी कुमारी.
नों ओर बालों के गुच्छे अविवाहित होने का चिन्ह हैं.

सेवा की जानने वाली स्त्रियाँ ही होती हैं। ऐसी स्त्रियों का
प्रतिष्ठा होती है।

ंश असभ्य जातियों में स्त्रियाँ केवल कामोत्तेजना को तृप्त
। की सेवा करने के लिए होती हैं। कुछ जातियों में, जिन
में स्त्रियों की संख्या अधिक है, स्त्रियाँ एक पालतू पशु
इत्व की तरह समझी जाती हैं। घर का सब काम काज
उन्हें करना पड़ता है; पति की सेवा करनी पड़ती है,
अच्छा खाना मिलता है न अच्छा कपड़ा। पुरुष दिन भर
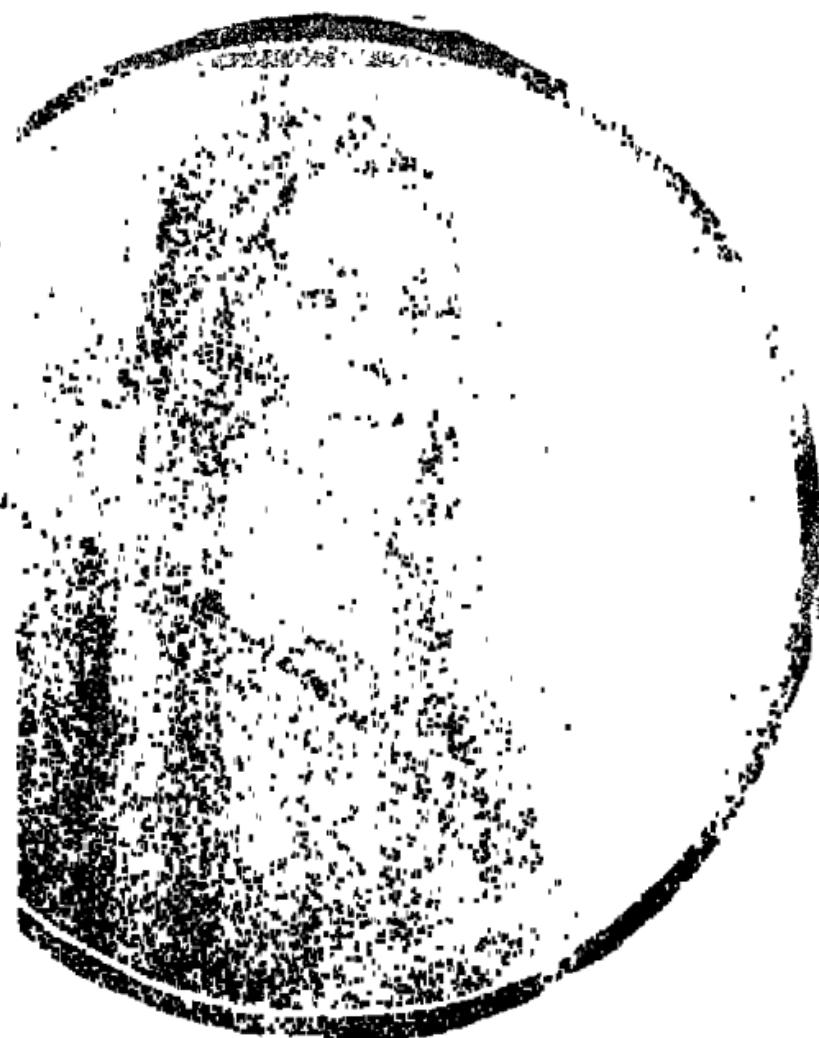
परीज़ोना की स्त्री।
। के आकार की अलकें विवाहित होने का चिन्ह हैं।
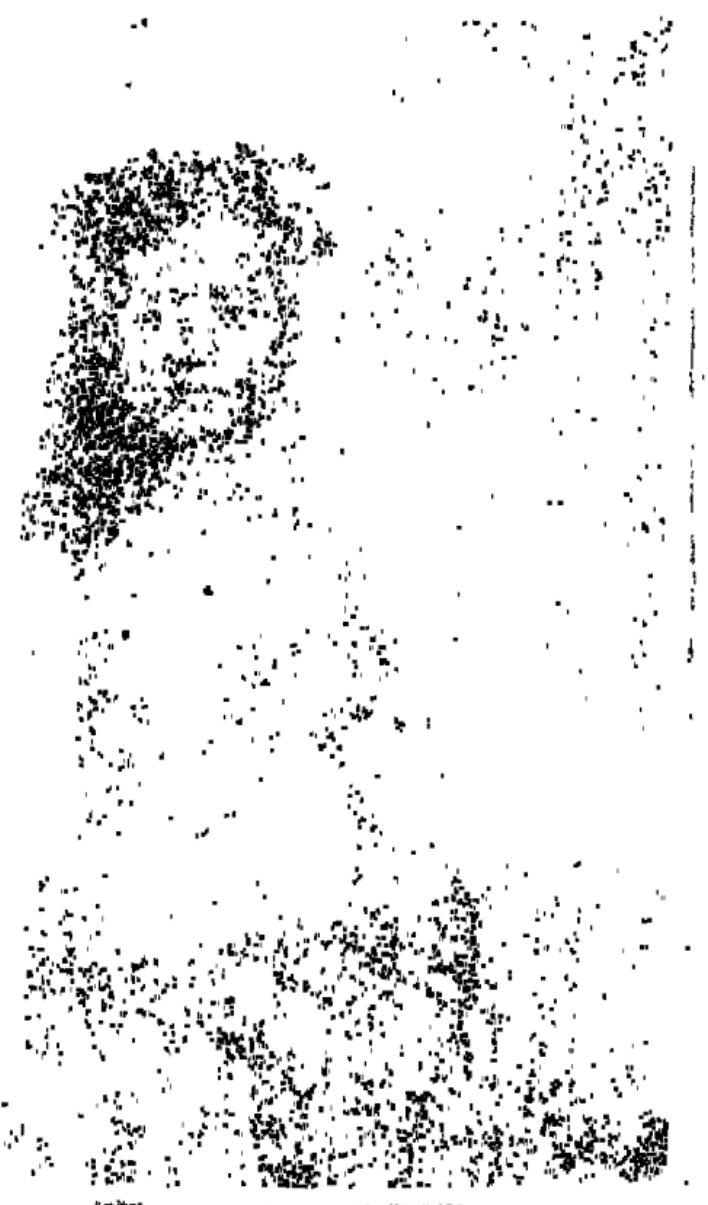
फ़िजी द्वीप की कुमारी.

सर बालों की लटें अविवाहित होने का चिन्ह है.

आनन्द से इधर उधर घूमते हैं, शिकार खेलते हैं और स्त्रियाँ पुरुषों के लिए भोजन जुटाती हैं, पकाती हैं तथा अन्य सब काम काज करती हैं।

स्त्रियों का महत्व उनकी संख्या पर निर्भर है। जहाँ स्त्रियाँ अधिक होती हैं और पुरुष कम वहाँ स्त्रियों का अधिक आदर तथा सम्मान नहीं होता। असभ्य जातियों में यह बात स्पष्ट देखने को मिलती है। जिन जातियों मे स्त्रियाँ अधिक हैं, उनमें एक पुरुष अनेक स्त्रियाँ रख लेता है, बात बात पर स्त्रियों को मारता-पीटता तथा तलाक़ तक दे देता है। परन्तु जिन जातियों में स्त्रियों की संख्या कम है उन जातियों में स्त्री का पूर्ण आदर तथा सम्मान होता है। जितनी ही कोई चीज़ कम होती है उतना ही उसका अधिक मूल्य होता है और जितनी ही अधिक होती है उतना ही उसका मूल्य कम होता है। असभ्य जातियों में शिशु हत्या खूब प्रचलित है, परन्तु इसका परिचालन एक मात्र इसी संख्या के सिद्धान्त पर निर्भर होता है। जिन जातियों में स्त्रियों की अधिकता है उनमें कन्याएँ जन्म लेते ही मार डाली जाती हैं और जिन जातियों में पुरुष अधिक हैं और स्त्रियाँ कम, उनमें बालक जन्म लेते ही मार डाले जाते हैं। विवाह पर भी संख्या का यथेष्ट प्रभाव पड़ता है। जिन जातियों में स्त्रियों का आधिक्य है, उनमें एक पुरुष अनेक विवाह कर डालता है, परन्तु जहाँ स्त्रियों की कमी है वहाँ एकही स्त्री अनेक पुरुषों की, जो परस्पर भाई भाई होते हैं, पत्नी बनकर रहती है। असभ्य जातियों में स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक हीन तथा निकृष्ट प्राणी मानी जाती हैं। प्रायः समस्त असभ्य जातियाँ स्त्रियों को निकृष्ट मानती हैं। संसार में जितने अवगुण हैं वे सब स्त्रियों में कूट कूट कर भर दिये गये समझे जाते हैं। झूठ बोलना, कपट रखना, दग़ाबाज़ी, व्यभिचार इत्यादि इत्यादि सब स्त्रियों के ही काम समझे जाते हैं। बहुत सी धार्मिक रसूमात ऐसी होती हैं जिनमें स्त्री का उपस्थित होना निषिद्ध समझा जाता है।
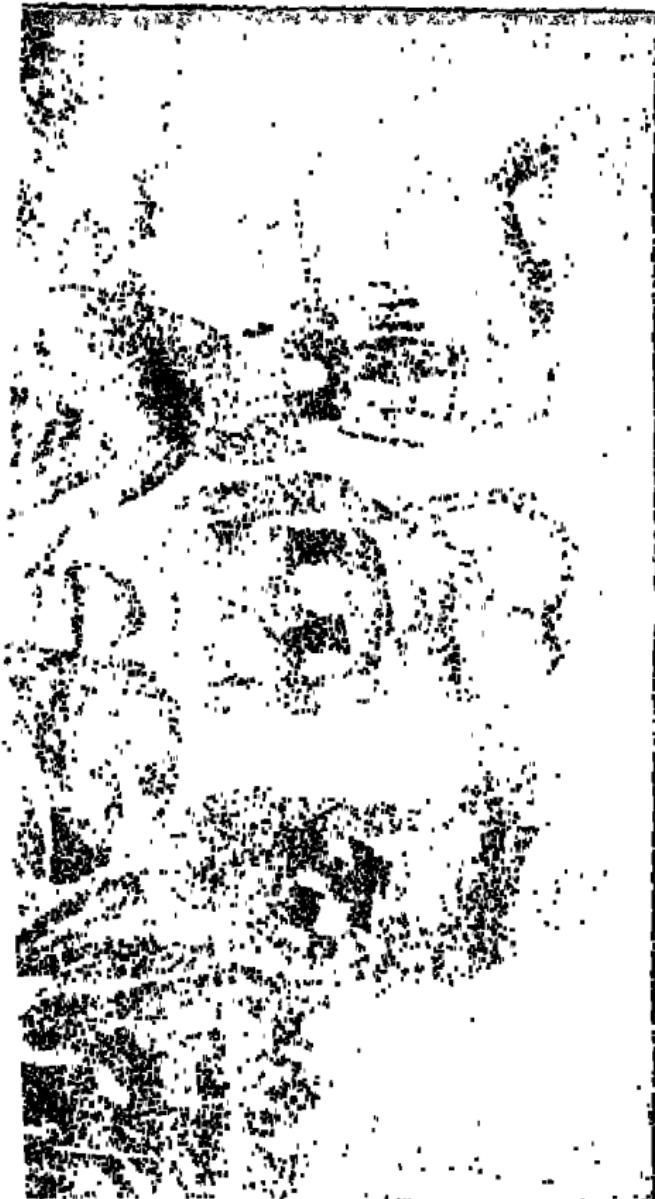
ज़ूलू जाति (अफ़्रीका) की स्त्रियाँ.
पूर्ण शृंगार किये हुए.

प्रायः समस्त सभ्य कहलाने वाली जातियाँ स्त्री को पुरुष की अपेक्षा निकृष्ट प्राणी मानती हैं। परन्तु; सभ्य जातियों में स्त्रियों को अधिक सुख मिलता है—असभ्य जातियों में उन्हें इतना सुख नहीं मिलता।

इस पुस्तक के पढ़ने से पाठकों को असभ्य जाति की स्त्रियों के सम्बन्ध में प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें मालूम होजायँगी। उनके रूपरंग, नखशिख, शृङ्गार तथा परिच्छादन, आचार-विचार, उनकी सुविधायें, असुविधायें, उनका सामाजिक महत्व इत्यादि इत्यादि सभी बातें ज्ञात होजायँगी।

इस पुस्तक की सामग्री अँग्रेज़ी पुस्तकों से ली गई है। अँग्रेज़ी में इस विषय पर अनेक पुस्तकें हैं; पर खेद है कि हिन्दी में इस विषय पर अभी तक एक भी पुस्तक नहीं थी। आशा है इस पुस्तक से हिन्दी की यह कमी कुछ अंशों में पूरी होजायगी।

卐 卐 卐

पालीनीशिया

१

भौगोलिक स्थिति, शारीरिक बनावट, सौन्दर्य्य उसकी प्राप्ति तथा रक्षा, शारीरिक विकृति और गुदना, परिच्छादन, टापा और उसका निर्माण, चटाई के वस्त्र, शृंगार, जन्म तथा बाल्यकाल, बालहत्या.

भौगोलिक स्थिति

पालीनीशिया अनेक द्वीपों के समूह का नाम है। यूनानी भाषा में 'पाली' के अर्थ बहुत और 'नीशिया' के अर्थ द्वीप के होते हैं। आस्ट्रेलिया के पश्चिम पैसेफिक महासागर में कुछ द्वीपों का समूह पालीनीशिया के नाम से प्रसिद्ध है। यदि न्यूज़ीलैण्ड से पैसेफिक को पार करते हुए फ़िजी और हवाई के मध्य एक लकीर खींची जाय तो वह पालीनीशिया को इस प्रकार काटेगी कि पूर्व में माइकोनीशिया और पश्चिम में मैलेनीशिया पड़े। पालीनीशिया के सब द्वीपों का क्षेत्रफल इस प्रकार है कि उनमें जितने द्वीप हैं यदि उन सबको लिया जाय तो उनका व्यास एक हज़ार मील का होगा। पालीनीशिया के मुख्य द्वीप ये हैं:—टांगा अथवा फ्रेण्डली, सामोआ, हर्वी अथवा कुक, सोसाइटी द्वीप जिसमें कि ताहीती भी सम्मिलित है तथा हवाई द्वीप जिसे कैप्टन कुक ने सैण्डविच द्वीप का नाम दिया है। ये सब द्वीप फिजी के पूर्व में स्थित है। इनमें से कुछ तो भली भाँति आबाद हैं और कुछ बिलकुल उजाड़ पड़े हुए हैं। इन सब द्वीपों में पालीनीशियन जाति के लोग रहते हैं और सब एक भाषा बोलते हैं।

सामोआ द्वीप की स्त्री.

ालों में लगा हुआ फूल इसकी सौन्दर्योपासना का चिन्ह है

इस जाति के लोग कद में लम्बे और हाथ पैर के सुदृढ़ होते हैं। इनके बाल काले अथवा गहरे बादामी रंग के होते हैं। इनमें से कुछ के बाल तो सीधे होते हैं और कुछ के घुंघराले। इनके शरीर का रंग बादामी मिश्रित पीत होता है। नाक सीधी और कुछ बड़ी होती है। यात्रियों ने इस जाति को एक सुन्दर जाति माना है।

शारीरिक बनावट

इस जाति का शरीर बिल्कुल सीधा होता है और इनकी चाल में एक ऐसी विशेषता है जो संसार की किसी अन्य जाति की चाल में बहुत कम पाई जाती है। इस जाति की स्त्रियां यूरोपियन यात्रियों तक की दृष्टि को सुन्दर प्रतीत होती हैं। इन स्त्रियों के सम्बन्ध में मिसेस बिशप का कथन है— "स्त्रियों की चाल एक विचित्र प्रकार की होती है और नेत्रों को बड़ी भली मालूम होती है। मैं इस जाति की स्त्री को केवल उसकी चाल से बता सकती हूँ। इन स्त्रियों की चाल के सामने यूरोपियन स्त्रियों की चाल बड़ी भद्दी प्रतीत होती है।" एक दूसरे यात्री का कथन है— "टांगा जाति की स्त्रियों की चाल ऐसी होती है कि मानो वे हवा में तैर रही हैं। उनका वक्षस्थल मनोहर होता है। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि बुढ़ापे में भी इन स्त्रियों की शारीरिक बनावट नहीं बिगड़ती।"

पालीनीशियन बड़े सौन्दर्योपासक होते हैं। स्त्रियां अपने सौन्दर्य को बढ़ाना और उसे बुढ़ापे तक रखना भली भांति जानती हैं। ये लोग बड़े स्नान प्रेमी होते हैं। ये लोग नित्य स्नान करते हैं। स्नान सदा मीठे पानी में करते हैं। यदि कभी समुद्र के खारी पानी में स्नान करते भी हैं तो उसके पश्चात् एक बार मीठे पानी से

सौन्दर्य्य

अवश्य नहाते हैं। साबुन के स्थान में ये लोग एक प्रकार की लाल मिट्टी तथा हरी नारंगियों का अर्क काम में लाते हैं। शरीर में सुगन्धित तैल भी लगाते हैं। इन सब क्रियाओं से इनका शरीर अत्यन्त कोमल और चिकना रहता है। शरीर की कोमलता तथा स्थूलता इनका मुख्य सौन्दर्य समझा जाता है। शरीर को कोमल रखने के लिये स्त्रियां उसे धूप से बहुत बचाती हैं। बालक और

ों को मोटा करने के लिए ये लोग उन्हें खूब ठूँस ठूँस कर
म नहीं करने देते। अधिक खाने के लिए बहुधा बालकों

टोंगा स्त्रियां
बालों को भिन्न भिन्न प्रकार से सँवारे हुए

पने बालों को अनेक प्रकार से सँवारती हैं और उनमें फूल
श्र की रात को स्त्रियां बालों में मूँगे की राख का लेप करती

टांगा स्त्री.

की रात को बालों में मूँगे की राख का लेप किये हुए.

है जिससे इनके बाल खूब साफ हो जाते हैं और साथ ही हल्के बादामी रँग जाते हैं। इतवार को प्रातःकाल सिर धोने के पश्चात् सुगंधित तैल लगाकर बालों को सँवारती हैं। बालों में एक प्रकार का गोंद भी लगाती हैं जिससे बाल अधिक समय तक जैसे के तैसे रहते हैं। कुमारियाँ बालों की लटें बनाकर कन्धों पर छोड़ लेती हैं। विवाह के समय यह लटें काट डाली जाती हैं। विधवाओं के केश पूर्णतया काट डाले जाते हैं।

शारीरिक विकृति और गुदना

पालीनीशिया के अनेक द्वीपों में बच्चों की खोपड़ियाँ कृत्रिम ढंग से विगाड़ दी जाती हैं। खोपड़ी के आगे पीछे लकड़ी अथवा पत्थर लगाकर उन्हें दबाते हैं। बालिकाओं की नाक को कृत्रिम रूप से चपटा बनाने की चेष्टा की जाती है। माताएं बालिकाओं की नाक इस प्रकार दबाती रहती हैं जिससे नाक कुछ चपटी हो जाती है और नथुने फैल जाते हैं। चपटी नाक और फैले हुए नथुने सुन्दर समझे जाते है। बालक और बालिकाओं के कान भी छेद जाते हैं। ये लोग शरीर में रंग विरंग के गुदने भी गुदाते हैं। स्त्रियां बाहों पर चूड़ियाँ गुदवाती हैं और पुरुष फूल तथा अन्य इसी प्रकार के चित्र गुदवाते हैं। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में गुदवाने की प्रथा अधिक प्रचलित है। गुदना मनुष्य तथा पशुओं के दांत से गोदा जाता है। मिशनरियों के सत्संग से गुदने की प्रथा क्रमशः दूर होती जाती है, परन्तु कुछ द्वीपों में मिशनरियों के उपदेशों ने भी इस प्रथा का उन्मूलन नहीं किया। सामोआ द्वीप की स्त्रियां अब भी उस पुरुष को पसन्द नहीं करतीं जो कि गुदना नहीं गुदाए होता।

परिच्छादन

पालीनीशियन कभी सर्वथा नंगे नहीं रहे। यद्यपि वहां का जल वायु ऐसा है कि कपड़ा पहनना बिल्कुल अनावश्यक जान पड़ता है; परन्तु तो भी लोग शौक़िया कपड़े पहनते हैं। पहले इनकी साधारण पोशाक पत्तियों की होती थी; परन्तु अब मिशनरियों तथा यात्रियों की कृपा से वहां मैनचेस्टर के कपड़ों का रवाज फैल गया है। सामोआ में चटाइयाँ पहनने की प्रथा है। कुछ द्वीपों में नारियल के

सामोआ स्त्री.
बालों को यूरोपियन ढंग से सँवारे हुए.

पत्ते के लहँगे पहनने का रवाज भी है। इनका सबसे सुन्दर परिच्छादन "सीसी" है। सीसी भिन्न भिन्न प्रकार की पत्तियों की बनी हुई एक झालर सी होती है जिसे स्त्रियां टापा के लहँगे के ऊपर कमर में बाँध लेती हैं। कभी कभी गले में भी सीसी पहनने की प्रथा है।

टापा और उसका निर्माण

इन लोगों का खास कपड़ा टापा होता है। टापा बनाने की कला पालीनीशिया की एक महत्वपूर्ण कला है और इस कला को पालीनीशियनों ने यथाशक्ति खूब उन्नत किया है।

टापा बनाने के लिए कुछ विशेष वृक्षों की छाल की आवश्यकता पड़ती है। ये वृक्ष इसी काम के लिए उगाये जाते हैं। सबसे अच्छा टापा 'पेपर मलबैरी' का बनता है। गरीब आदमी बरगद तथा अन्य वृक्षों से भी टापा बना लेते हैं। टापा बनाने का काम स्त्रियाँ ही करती हैं। पहले वृक्ष की छाल पानी में भिगो कर मुलायम की जाती है जिससे ऊपरी कड़ी तह निकल जाती है। भीतर की मुलायम तह फिर पानी में भिगोई जाती है। इसके पश्चात् इस छाल को एक लकड़ी के लट्ठे पर रखकर लकड़ी की मुँगरी से खूब कूटा जाता है। इस क्रिया से छाल के रेशे परस्पर मिल जाते हैं और वह फैलकर कागज की भिल्ली सी हो जाती है। इसी प्रकार कई सप्ताहों तक छालों के टुकड़ों को पीट पीट कर जोड़ा जाता है; जिससे एक बहुत बड़ा थान, जिसकी लम्बाई २०० गज़ और चौड़ाई ४ गज़ तक होती है, तैयार हो जाता है। तैयार हो जाने पर थान धूप में सुखा लिया जाता है। धूप में सुखाने से छाल का रंग उड़ जाता है और वह सफेद हो जाती है। इसके पश्चात् इस पर भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों से बेल बूटे बनाये जाते हैं। केले की पत्तियों के बेल बूटे काट कर और उनमें रंग लगा कर थान पर छापती चली जाती हैं। फूलों को रंग में डुबोकर छापने की प्रथा भी है। इसके पश्चात् कपड़े को पानी के प्रभाव से बचाने के लिए उस पर राल अथवा गोंद की वार्निश कर दी जाती है। यह कपड़ा तीन चार महीने से अधिक नहीं ठहरता। टापा बनाने के लिए एक

हवाई द्वीप का टापा.